पाठ्यक्रम संरचना (Course Structure)

सेमेस्टर	पत्र (Paper)	कोर कोर्स (Core Course)	विभागीय चयनित पाठ्यक्रम (Departmental Elective Course)	सहायक चयनित (Miner Elective)	शोध परियोजना (Research Project)	क्रेडिट (Credit)	अंक (Marks)
प्रथम सेमेस्टर 1st Semester	6	4	-	1	1	28 (4x5+4+4)	500 (100x5)
द्वितीय सेमेस्टर 2nd Semester	5	4	-	-	1	24 (4x5+4)	500 (100x5)
तृतीय सेमेस्टर 3rd Semester	5	2	2		1	24 (4x5+4)	400 (100x4)
चतुर्थ सेमेस्टर 4th Semester	5	2	2		1	24 (4x5+4)	500 (100x5)
कुल	21	12	4	1	4	100	1900

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप चयन आधारित सेमेस्टर प्रणाली (CBCS) पर आधारित

स्नातकोत्तर हिन्दी का पाठ्यक्रम

पत्र–विवरण

पत्र–संकेत संख्या (Paper Code)	पत्र का नाम	क्रेडिट	अंक	कुल क्रेडिट
	प्रथम सेमेस्टर			
MHNC-401	आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का इतिहास	5	100	28
MHNC-402	आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य	5	100	
MHNC-403	हिन्दी नाट्य एवं कथा साहित्य	5	100	
MHNC-404	भारतीय काव्यशास्त्र	5	100	
MHNP-405	हिन्दी शोध परियोजना	4		
MHNM-406	हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि	4	100	
	द्वितीय सेमेस्टर			
HINC-411	आधुनिककालीन हिन्दी काव्य का इतिहास	5	100	24
HINC-412	आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रबन्ध–काव्य	5	100	
HINC-413	विविध गद्य विधाएं	5	100	
HINC-414	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	5	100	
HINC-415	हिन्दी शोध परियोजना	4	100	
	तृतीय सेमेस्टर			
HINC-501	हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता का इतिहास	5	100	24
HINC-502	आधुनिक काव्य	5	100	
HINE-503 (क) HINE-503 (ख) HINE-503 (ग)	भाषा विज्ञान हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि हिन्दी साहित्य और सिनेमा	5	100	
HINE-504 (क) HINE-504 (ख) HINE-504 (ग)	भारतीय साहित्य तुलनात्मक साहित्य (हिन्दी एवं नेपाली) प्रवासी हिन्दी साहित्य	5	100	
HINP-505	हिन्दी शोध परियोजना	4		
	चतुर्थ सेमेस्टर			24
HINC-511	हिन्दी आलोचना एवं आलोचक	5	100	
HINC-512	छायावादोत्तर काव्य	5	100	
HINE- 513 (क)	प्रयोजनमूलक हिन्दी	5	100	
HINE-513 (ख)	पटकथा एवं विज्ञापन–लेखन			
HINE-513 (ग)	मीडिया–लेखन			
HINE-514 (क)	हिन्दी लोक–साहित्य	5	100	
HINE-514 (ख)	भोजपुरी साहित्य			
HINE-514 (ग)	अवधी साहित्य			
HINE-515	हिन्दी शोध परियोजना	4	100	

कूट–संकेत :

MHNC : एम ए. हिन्दी कोर पेपर; MHNM : एम ए. हिन्दी माइनर इलैक्टिव पेपर; MHNE : एम ए. हिन्दी इलैक्टिव पेपर; MHNP : एम ए. हिन्दी शोध परियोजना।

पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कूट संख्या (कोर्स कोड) में पहला अक्षर M मास्टर (स्नातकोत्तर) डिग्री का बोधक है, बाद के दो अक्षर HN हिन्दी विषय के संकेतक हैं और अन्तिम तीसरा अक्षर C, E आदि पाठ्यक्रम की प्रकृति का। अंकों में प्रथम अंक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के वर्ष का द्योतक हैं और बाद के दो अंक प्रश्नपत्र की संख्या के। उदाहरण के लिये MHNC-401 में M का अर्थ एम. ए. है, HN का अर्थ हिन्दी (Hindi) है, C का कोर पेपर (Core Paper), 4 का चतुर्थ वर्ष और 01 का प्रथम प्रश्नपत्र है।

इसी तरह कूट अक्षरों का अर्थ इस प्रकार होगा–

C - Core Paper; E- Elective; P- Project; M- Miner Elective

आवश्यक निर्देश :

1. यह पाठ्यक्रम एम. ए. में हिन्दी विषय का चयन करने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए है।
2. एम. ए. प्रथम वर्ष के दोनों सेमेस्टर (प्रथम एवं द्वितीय) के सभी प्रश्नपत्र सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य (CORE PAPER) होंगे।
3. द्वितीय वर्ष के तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर में प्रथम दो–दो प्रश्नपत्र अनिवार्य पत्र (CORE PAPER) के रूप में होंगे। शेष दो–दो प्रश्नपत्रों के तीन–तीन विकल्प क, ख, ग के रूप में दिये गये हैं। प्रति प्रश्नपत्र विद्यार्थी इनमें से किसी एक का चयन अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार कर सकते हैं।
4. प्रथम सेमेस्टर के माइनर प्रश्नपत्र का अध्ययन हिन्दी के विद्यार्थी नहीं करेंगे। यह प्रश्नपत्र अन्य विषयों के उन विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है, जो माइनर विषय के रूप में हिन्दी का चयन करेंगे। हिन्दी के विद्याथिर्यों के लिये किसी अन्य विषय के माइनर प्रश्नपत्र का चयन इसके स्थान पर करना होगा।
5. सभी विद्यार्थियों का प्रत्येक सेमेस्टर में एक शोध परियोजना करनी होगी जो 4 क्रेडिट की होगी। शोध परियोजना विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में करेंगे। प्रथम एवं द्वितीय दोनों वर्षों के अन्त में शोध परियोजना के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेंगे, जिसका मूल्यांकन बाह्य एवं आन्तरिक परीक्षकों द्वारा किया जायेगा।

<u>सहायक (माइनर) पाठ्यक्रम :</u>

- यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है जो किसी अन्य संकाय/विषय के विद्यार्थी होंगे, परन्तु कला संकाय से हिन्दी को सहायक (माइनर) विषय के रूप में चुनेंगे।
- इस पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि विद्यार्थियों को साहित्य का आस्वाद भी प्राप्त हो सके और वे प्रतियोगी परीक्षाओं में आने वाले सामान्य हिन्दी के प्रश्नों की तैयारी भी कर सकें।
- हिन्दी का माइनर प्रश्नपत्र चार क्रेडिट का है जिसके लिये साठ कक्षाएँ निर्धारित होंगीं।

सामान्य परिणाम (General Outcome)

- विद्याथियों को हिन्दी भाषा के साथ–साथ उसमें उपलब्ध साहित्य का आधारभूत ज्ञान प्राप्त होगा।
- साहित्य के मूलभूत स्वरूप, यथा विभिन्न विधाओं, हिन्दी के रोज़गारपरक स्वरूप आदि की जानकारी प्राप्त होगी।
- हिन्दी में रचनात्मक तथा व्यवसायिक कौशल प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों में मानवीय संवेदना, साहित्यिक विवेक, भाषिक कौशल, राष्ट्रीयता की भावना तथा नैतिकता का विकास होगा।
- 'प्रयोजनमूलक हिन्दी'; 'मीडिया लेखन'; 'पटकथा एवं विज्ञापन लेखन' तथा 'हिन्दी साहित्य एवं सिनेमा' जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी भाषा एवं साहित्य के नवन्नव आयामों से अवगत होकर अधिक रोजगार–क्षम हो सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
प्रथम सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC401**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का इतिहास**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक एवं मध्यकालीन इतिहास से अवगत कराना है। इसके द्वारा उन्हें हिन्दी भाषा एवं साहित्य की पृष्ठभूमि तथा उसके आदिकालीन स्वरूप से अवगत कराना तथा हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर भक्तिकाल एवं रीतिकाल तक के इतिहास का ज्ञान कराना प्रमुख उद्देश्य रहेगा।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	भारतीय भाषाओं की पृष्ठभूमि; भारत में साहित्य–सृजन की परम्परा; प्राचीन भारतीय साहित्य का सामान्य वैशिष्ट्य; हिन्दी भाषा और साहित्य की पृष्ठभूमि; हिन्दी का अर्थ और क्षेत्र; अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी।	15	1
2.	साहित्य का इतिहास दर्शन और इतिहास लेखन की पद्धतियाँ; हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा; हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास–ग्रन्थ; हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण; आदिकाल के नामकरण एवं सीमांकन–सम्बन्धी विविध मत।	15	1
3.	आदिकालीन हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; आदिकाल की विशेषताएं एवं साहित्यिक प्रवृत्तियां; आदिकालीन हिन्दी साहित्य की विविध धाराएं– रासो साहित्य, आदिकालीन हिन्दी का जैन साहित्य, सिद्ध और नाथ साहित्य; अमीर खुसरो की हिन्दी कविता; विद्यापति और उनकी पदावली तथा लौकिक साहित्य; आदिकालीन साहित्य की *भाषा।*	15	1
4.	भक्ति–आन्दोलन के उदय की पृष्ठभूमि तथा परिस्थितियां; भक्ति–आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तः–प्रादेशिक वैशिष्ट्य; आलवार सन्त; भक्ति–काव्य के प्रमुख सम्प्रदाय और उनका वैचारिक आधार; पूर्ववर्ती काव्यधाराओं का भक्ति–काव्य पर प्रभाव; निर्गुण–सगुण काव्य और प्रमुख कवि– संत–काव्य, सूफी–काव्य, कृष्ण–काव्य तथा राम–काव्य का परिचय एवं प्रवृत्तियां; भक्तिकालीन साहित्य और लोकजागरण।	15	1
5.	रीतिकाल की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; रीति की अवधारणा और रीति–काव्य; रीति–काव्य की सामान्य प्रवृत्तियां; रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं– रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त : सामान्य परिचय, रचनाएं, रचनाकार एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ; रीति कवियों का आचार्यत्व; रीतिकालीन काव्य में लोकजीवन; रीतिकालीन काव्य–भाषा एवं अभिव्यंजना शिल्प; रीतिकालीन गद्य।	15	1

पाठ्यक्रम–परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी विश्व–भर में सबसे प्राचीन भारतीय साहित्य की परम्परा से संक्षेप में अवगत हो सकेंगे और इस तरह हिन्दी एवं भारतीय साहित्य को समन्वित रूप में देख–समझ सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक के इतिहास को जान सकेंगे।
3. इतिहास से अवगत होकर विद्यार्थी तत्कालीन परिस्थितियों, उनमें रचे गये साहित्य तथा उसकी विशेषताओं को सम्यक् ढंग से समझ सकेंगें।
4. हिन्दी भाषा तथा उसमें रचित साहित्य की विरासत पर गर्व कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य का भूमिका; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।
5 हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास; डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1, 2; विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी।
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास; सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास; डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।
9 हिन्दी साहित्यः बीसवीं शताब्दी; आ. नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10 हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन; नलिन विलोचन शर्मा; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
11 हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास; डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। प्रथम एवं द्वितीय खण्ड।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
प्रथम सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC402**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : इस पत्र का उद्देश्य हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक के प्रमुख प्रतिनिधि कवियों के काव्य से विद्यार्थियों का परिचय करवाना है। आदिकालीन और मध्यकालीन हिन्दी साहित्य प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों रूपों में रचा गया है तथा भारतीय जनमानस को इसने काफी गहराई तक प्रभावित किया है। इस पत्र में आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य को रखा गया है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**क. सरहपाद–दोहाकोश** ख. **गोरखनाथ–सबदी** पाठ्यपुस्तक : आदिकालीन काव्य; सम्पादक–डॉ. वासुदेव सिंह; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** भक्ति–काव्य पर सिद्ध–नाथ साहित्य का प्रभाव; सिद्ध साहित्य और सरहपाद; सरहपाद का काव्य–सौष्ठव; नाथ–पन्थ और गोरखनाथ; गोरखनाथ के काव्य की प्रासंगिकता; गोरखनाथ का काव्य–सौन्दर्य।	15	1
2.	**कबीरदास :** **पाठ्य पुस्तक– कबीर; लेखक–** आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी **पाठांश–** पद सं.– 1, 2, 33, 41, 123, 130, 134, 160, 163, 168, 191, 199, 224, 247 तथा 256। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : कबीर की भक्ति–भावना; कबीर का रहस्यवाद; कबीर का समाज–दर्शन और उसकी प्रासंगिकता; कबीर की विद्रोह–भावना या क्रान्तिकारी चेतना; कबीर –काव्य का दार्शनिक पक्ष; कबीर : कवि के रूप में।	15	1
3.	**सूरदास :** पाठ्य पुस्तकः **भ्रमरगीत सार**; संपादक– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। पदसंख्या–9, 23, 25, 34, 62, 64, 65, 82, 85, 89, 95, 97, 115, 122, 130, 171, 384, 400। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–**कृष्ण–भक्ति काव्य और सूरदास; सूर की भक्ति–भावना; माधुर्य और श्रृंगार–वर्णन; वात्सल्य–वर्णन; लोक तत्त्व; गीति–तत्त्व; भ्रमरगीत : अन्तर्वस्तु तथा विदग्धता।	15	1
4.	**मीराबाई :** पाठ्य–पुस्तक : पाठ्य पुस्तक : **मीराबाई की पदावली**; सम्पा.– परशुराम	15	1

	चतुर्वेदी। पद सं.– 1, 10, 17, 18, 20, 22, 23, 35, 36, 41, 46, 116, 118, 146, 158, 175, 199, 200। **रसखान :** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** मीरा की भक्ति; विद्रोही–चेतना; गीति–तत्त्व। कृष्ण–भक्त मुस्लिम कवि और रसखान; रसखान के काव्य में प्रेम के आयाम।		
5.	**क. बिहारीलाल** : पाठ्यपुस्तक– **बिहारी रत्नाकर**; संपादक–जगन्नाथदास रत्नाकर । पाठ्यांश : दोहा संख्या–*1, 5, 6, 7, 15, 19, 20, 21, 25, 32, 38, 42, 48, 51, 60, 69, 73, 121, 131, 141, 181, 300, 363, 428 तथा 487।* आलोचना के प्रमुख बिन्दु– सौन्दर्य–भावना एवं शृंगार–वर्णन; बहुज्ञता; काव्य–सौष्ठव। **ख. घनानन्द :** **घनानन्द कवित्त**; संपा.–आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र। पद सं.– 1 से 15 तक। आलोचना के प्रमुख बिन्दु– रीतिमुक्त काव्यधारा और घनानन्द; प्रेम–व्यंजना; सौन्दर्य–वर्णन।	15	1

पाठ्यक्रम–परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की प्राचीन एवं मध्यकालीन परम्परा को जान सकेंगे।
2. अपनी साहित्यिक विरासत को समझते हुए उस पर गर्व कर सकेगे।
3. लगभग 800 वर्षों की हिन्दी कविता के माध्यम से विभिन्न युगीन सन्दर्भों को समझ सकेंगे।

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य का आदिकाल; डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. पृथ्वीराज रासो की भाषा; डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. कबीर; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।
4. कबीर बीजक की भाषा; डॉ. शुकदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. मध्यकालीन धर्म साधना; डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
6. नाथ पंथ और संत साहित्य; डॉ. नगेन्द्रनाथ उपाध्याय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
7. संत साहित्य की समझ; डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय, रचना प्रकाशन, जयपुर।
8. मध्यकालीन काव्य आन्दोलन; डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र।
9. साहित्य विमर्श का विवेक; डॉ. सुशील कुमार शर्मा, मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली।
10. सामाजिक समरसता में मुसलमान हिन्दी कवियों का योगदान; डॉ लखनलाल खरे, रजनी प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
प्रथम सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC403**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी नाट्य एवं कथा साहित्य**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : गद्य साहित्य में नाटक, उपन्यास एवं कहानी अत्यन्त लोकप्रिय विधाएं हैं। प्रस्तुत पत्र विद्यार्थियों को हिन्दी नाटक एवं कथा साहित्य के वैशिष्ट्य से अवगत कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें प्रतिनिधि रचनाओं के रूप में हिन्दी की बहुख्यात् नाट्य एवं कथा–रचनाओं को रखा गया है। ।			
केडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	केडिट संख्या
1.	**नाटक :** **स्कन्दगुप्त**–जयशंकर प्रसाद **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** जयशंकर प्रसाद का नाट्य–शिल्प; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'स्कन्दगुप्त' की समीक्षा; 'स्कन्दगुप्त' में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना; 'स्कन्दगुप्त' में युगबोध; स्कन्दगुप्त के प्रमुख पात्र।	15	1
2.	**एकांकी :** **अंधेर नगरी**–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र **औरंगजेब की आखिरी रात**–डॉ. रामकुमार वर्मा **भोर का तारा**–जगदीशचन्द्र माथुर **स्ट्राइक**–भुवनेश्वर **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** एकांकियों की समीक्षा तथा एकांकीकारों की एकांकी कला।	15	1
3.	**उपन्यास :** **गोदान**–प्रेमचन्द **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– प्रेमचन्द की उपन्यास कला; उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर गोदान की समीक्षा; प्रमुख पात्र; यथार्थ और आदर्श; स्त्री–विमर्श; गांव और शहर; किसान जीवन; वस्तु–शिल्प वैशिष्ट्य। **अथवा** **बाणभट्ट की आत्मकथा**–हजारीप्रसाद द्विवेदी **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– हिन्दी उपन्यास को आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का अवदान; 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का प्रतिपाद्य; इतिहास और संस्कृति–चेतना; आधुनिकता; स्त्री–दृष्टि; भाषा–शिल्प वैशिष्ट्य।	15	1
4.	**कहानियां :** **उसने कहा था**–चन्द्रधर शर्मा गुलेरी **दुनिया का अनमोल रतन**–प्रेमचन्द **कोसी का घटवार**–शेखर जोशी	15	1

	परिन्दे–निर्मल वर्मा **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** कहानियों की समीक्षा तथा कहानीकारों की कहानी–कला		
5.	**कहानियां :** **गैंग्रीन**–अज्ञेय **तीसरी कसम**– फणीश्वरनाथ रेणु **इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर**–हरिशंकर परसाई **चीफ की दावत**– भीष्म साहनी **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– कहानियों की समीक्षा तथा कहानीकारों की कहानी–कला	15	1

पाठ्यक्रम–परिणाम :

1. विद्यार्थी चयनित रचनाओं के माध्यम से हिन्दी नाट्य एवं कथा साहित्य के वैशिष्ट्य को जान सकेंगे और उसके व्यापक अध्ययन के लिये प्रेरित होंगे।
2. नाट्य एवं कथा साहित्य के अध्ययन के आलोचकीय विवके से सम्पन्न हो सकेंगे।
3. साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल का विकास हो सकेगा।

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी कहानी का विकास; मधुरेश; लोकभारती, दिल्ली।
2. हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग–1 और भाग–2; गोपाल राय
3. हिन्दी कहानीः पहचान और परख; इन्द्रनाथ मदान;
4. कहानीः नई कहानी; डॉ. नामवर सिंह; लोकभारती, इलाहाबाद।
5. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति; सं. देवीशंकर अवस्थी; राजकमल, दिल्ली।
6. समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य; रामस्वरूप चतुर्वेदी; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. हिन्दी जीवनी साहित्य : सिद्धान्त और अध्ययन; डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
प्रथम सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC404**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **भारतीय काव्यशास्त्र**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : काव्यशास्त्र का ज्ञान काव्य को सम्यक् रीति से जानने–समझने के लिये आवश्यक होता है। भारत में काव्य की ही भांति काव्यशास्त्र की भी परम्परा अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। हिन्दी के आचार्यों ने इसमें योगदान देकर इसे और समयानुकूल तथा संगत बनाया है। प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख तत्त्वों से अवगत कराना है।			
केडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	केडिट संख्या
1.	भारतीय काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास; काव्य के लक्षण तथा स्वरूप; काव्य–प्रयोजन; काव्य–हेतु, काव्य के प्रकार।	15	1
2.	**रस सिद्धांत :** रस का अभिप्राय, स्वरूप एवं अवयव; रस–सिद्धान्त का सामान्य परिचय; भरतमुनि का रससूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार; विभिन्न रसों का सोदाहरण परिचय।	15	1
3.	**विभिन्न काव्य सिद्धान्त :** ध्वनि सिद्धान्त; रीति सिद्धान्त; वक्रोक्ति सिद्धान्त; औचित्य सिद्धान्त का परिचय। शब्द–शक्तियां और ध्वनि का स्वरूप। काव्य के गुण–दोष।	15	1
4.	**अलंकार–विवेचन :** अलंकार सिद्धान्त तथा निम्नलिखित अलंकारों का सोदाहरण परिचय– अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासाक्ति, अत्युक्ति, विशेषोक्ति, द्रष्टान्त, उदाहरण, प्रतिवस्तूपमा, प्रतीप, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, काव्यलिंग, विभावना, अपह्नुति, असंगति तथा विरोधाभास।	15	1
5.	**छन्द विवेचन :** छन्द की परिभाषा और तत्त्व; छन्दों का वर्गीकरण; काव्य में छन्दों का महत्त्व। अग्रांकित छन्दों के लक्षण और उदाहरण– वंशस्थ, वसन्ततिलका; मन्दाक्रान्ता; शार्दूलविक्रीडित; कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, बरवै, हरिगीतिका, कुण्डलिया, छप्पय तथा मुक्त छन्द।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा से परिचित हो सकेगे।
2. भारतीय काव्यशास्त्र और उसके प्रमुख तत्वों से अवगत हो सकेंगे।

3. काव्यशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्य के सम्यक् अनुशीलन का विवेक उत्पन्न हो सकेगा।

सहायक ग्रंथ :

1. हिस्टरी आफ संस्कृत पोयटिक्स; पी.बी काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. साहित्य शास्त्र; देश पाण्डे, पापुलर बुक डिपो, पूना।
3. भारतीय काव्यशास्त्र; सत्यदेव चौधरी।
4. काव्यशास्त्र की भूमिका; डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
5. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज; डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रका., दिल्ली।
6. रस सिद्धान्त; डॉ. नगेन्द्र
7. हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास; भगीरथ मिश्र
8. काव्य शास्त्र; डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
9. साहित्य शास्त्र और काव्य भाषा; डॉ. सियाराम तिवारी।
10. काव्य समीक्षा; डॉ. विक्रमादित्य राय।
11. लिटेरेरी क्रिटिसिज्म; राय एण्ड द्विवेदी, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
12. नई समीक्षा के प्रतिमान; डॉ. निर्मला जैन
13. काव्य के तत्व; देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
प्रथम सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNP405**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी शोध परियोजना**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है। उच्च शिक्षा का महत् उद्देश्य शोध है। किसी विषय पर शोध परियोजना करने से विद्यार्थियों में शोध–क्षमता का विकास हो और वे आगे चलकर एक अच्छे शोधकर्ता बन सकें, इस दृष्टि से इस पत्र की आयोजना पाठ्यक्रम में की गयी है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक :	उत्तीर्णांक : **प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे।	15	4

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की वारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष				
प्रथम सेमेस्टर				
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNM406**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : यह प्रश्नपत्र हिन्दी से इतर विद्यार्थियों के लिये है। इसलिये इसकी रचना इस प्रकार की गयी है, जिससे अन्य विषयों के विद्यार्थी हिन्दी भाषा, साहित्य और देवनागरी लिपि से सम्बन्धित उन महत्त्वपूर्ण बातों को जान सकें जिनसे वे हिन्दी भाषा, साहित्य और देवनागरी लिपि की सामान्य विशेषताओं से अवगत भी हो सकें और किन्हीं प्रतियोगी परीक्षाओं में भी उन्हें कुछ सहायता मिल सकें।				
क्रेडिट : **5**		पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**				

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**हिन्दी की संवैधानिक स्थिति :** राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा तथा हिन्दी; हिन्दी के क्षेत्र– क, ख, ग; भारतीय संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधान– अनुच्छेद 343 से 351 तक; राष्ट्रपति के आदेश सन् 1952, 1955 एवं 1960; राजभाषा अधिनियम–1963 यथा संशोधित–1967; राजभाषा नियम–1976 यथा संशोधित 1987; राजभाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका एवं चुनौतियां।	15	1
2.	**कार्यालयी हिन्दी :** प्रारूपण, संक्षेपण, टिप्पणी, प्रतिवेदन, ज्ञापन, मसौदा, अनुस्मारक, अधिसूचना, पृष्ठांकन तथा पत्र–लेखन।	15	1
3.	**हिन्दी भाषा और साहित्य का संक्षिप्त इतिहास :** हिंदी भाषा का उद्भव और विकास; हिन्दी का अर्थ, क्षेत्र और उसमें प्रचलित प्रमुख बोलियां; साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण; आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिककाल का संक्षिप्त परिचय।	15	1
4.	**देवनागरी लिपि :** देवनागरी लिपि का उद्भव और विकास; देवनागरी लिपि की विशेषताएं; देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता; देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयत्न; देवनागरी लिपि का मानकीकरण।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी हिन्दी की संवैधानिक स्थिति को जानकर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उसकी सही भूमिका को समझते हुए राजभाषा के रूप में उसके प्रति अपने कर्तव्य–निर्वाह हेतु और अधिक सचेत हो सकेंगे।
2. कार्यालयी हिन्दी से सम्बन्धित पत्राचार को जानकर हिन्दी में अपनी कार्य–कुशलता बढ़ा सकेंगे।

3. हिन्दी भाषा, साहित्य और देवनागरी लिपि से सम्बन्धित मूलभूत जानकारियों को प्राप्त कर इन विषयों से प्रतियोगी परीक्षाओं में आने वाले सामान्य प्रश्नों के उत्तर देने के लिये अच्छे ढंग से तैयार हो सकेंगे।

<table>
<tr><td colspan="3">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">द्वितीय सेमेस्टर</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNC411</td><td>पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
आधुनिककालीन हिन्दी काव्य का इतिहास</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के आधुनिक इतिहास विशेषकर काव्येतिहास की जानकारी देना है। इतिहास के बिना सम्यक् अध्ययन के किसी युग के साहित्य को समुचित ढंग से नहीं समझा जा सकता। अतः इसमें आधुनिक युग में रचे गये साहित्य, उसके लिये प्रेरक परिस्थितियों, विभिन्न काव्यान्दोलनों तथा उनके प्रभाव सहित आधुनिक हिन्दी काव्य के अनेकानेक चरणों, उनमें रचे गये काव्य, उसकी प्रवृत्तियों तथा रचयिता कवियों के बारे में जानकारी प्रस्तुत की गयी है।</td><td></td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 5</td><td>पूर्णांक : 25+75</td><td>उत्तीर्णांक : 33 प्रतिशत</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या : 75</td><td></td></tr>
</table>

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**आधुनिक काल (भारतेन्दु युग) :** पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक); आधुनिक काल का प्रारम्भ और नामकरण; उन्नीसवीं शताब्दी में स्वाधीनता संघर्ष एवं भारतीय पुनर्जागरण, हिन्दी काव्य को भारतेन्दु युग का अवदान; भारतेन्दु मण्डल के कवि तथा अन्य कवि; काव्यभाषा का निर्णय और भारतेन्दु युग; भारतेन्दुयुगीन कविता की मूल चेतना और विशेषताएं।	15	1
2.	**द्विवेदी युग :** नवजागरण का प्रभाव; नये काव्य–परिवर्तन का स्वरूप; महावीर प्रसाद द्विवेदी और तत्कालीन हिंदी कविता; काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली को प्रतिष्ठा; द्विवेदीयुगीन कविता : प्रमुख प्रवृत्तियां, रचनाएं एवं रचनाकार; स्वतन्त्रता–आन्दोलन और द्विवेदीयुगीन कविता।	15	1
3.	**छायावाद** : पृष्ठभूमि, नामकरण और सीमांकन; प्रमुख छायावादी कवि और उनका काव्य; छायावादकालीन अन्य प्रमुख कवि और उनका काव्य; नवजागरण और छायावाद; छायावादी काव्य–प्रवृत्तियां; राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा; छायावादकालीन काव्य–भाषा का स्वरूप और प्रदेय।	15	1
4.	**उत्तर छायावादी काव्य और काव्यान्दोलन** : हालावाद; प्रगतिवाद; प्रयोगवाद; नई कविता; स्वातन्त्र्योत्तर कविता; साठोत्तरी कविता; नवगीत तथा अन्य काव्यान्दोलन।	15	1
5.	**समकालीन कविता व अन्य काव्य–परिवर्तन :** समसामयिक परिवर्तनों, यथा– भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, औद्योगीकरण, बाजारीकरण आदि के प्रभाव और समकालीन कविता; दलित–चेतना, स्त्री–चेतना और जनजातीय चेतना की कविताएं; प्रवासी–काव्य; हिन्दीतर क्षेत्रों का हिन्दी–काव्य; विस्थापन की पीड़ा का काव्य; हिन्दी में अनूदित काव्य;	15	1

	21वीं सदी की हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां।		

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस प्रश्नपत्र के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिककाल में लिखे काव्य, उसके लिये प्रेरक परिस्थितियों तथा उसकी प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे।
2. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य से आधुनिककालीन काव्य के अन्तर को जान सकेंगे तथा नवयुगीन चेतना एवं संवेदना को समझ सकेंगे।
3. भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य की भूमिका को जान सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
द्वितीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC412**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रबन्ध–काव्य**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : कवियों द्वारा हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ही उत्कृष्ट प्रबन्ध–काव्यों के सृजन की परम्परा चली आयी है। एक–से–एक श्रेष्ठ महाकाव्य हिन्दी में उपलब्ध हैं, जिन्होंने परवर्ती कवियों पर तो अपना प्रभाव डाला ही है, जनता को भी बड़े व्यापक स्तर पर प्रभावित और प्रेरित किया है। इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को आदिकाल से लेकर मध्यकाल तक लिखे गये हिन्दी के प्रसिद्ध प्रबन्ध–काव्यों और उनकी विशेषताओं से परिचित कराना है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	चन्दवरदाई : **पृथ्वीराजरासो–रेवा तट** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : रासो काव्य–परम्परा और पृथ्वीराजरासो; पृथ्वीराजरासो की प्रामाणिकता; तत्कालीन परिवेश और पृथ्वीराजरासो; रासो का काव्य–सौष्ठव; रेवा तट का काव्य–वैशिष्ट्य।	15	1
2.	**मलिक मुहम्मद जायसी** **पद्मावत– नागमती वियोग वर्णन** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** सूफी काव्य–परम्परा और 'पद्मावत'; 'पद्मावत' में प्रेम–व्यंजना; 'पद्मावत' में लोक–तत्त्व; 'पद्मावत' का काव्य–सौष्ठव; पद्मावत के प्रतीकार्थ; नागमती वियोग–वर्णन का वैशिष्ट्य।	15	1
3.	**तुलसीदास** **श्रीरामचरितमानस;** गीता प्रेस, गोरखपुर **उत्तरकाण्ड :** दोहा संख्या– 21 से 41। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– राम–काव्य–परम्परा और तुलसीदास; निर्गुण का स्वरूप तथा कबीर और तुलसी के राम में अन्तर; तुलसी का समन्वयवाद, भक्ति–भावना, लोक–मंगल; दार्शनिक सिद्धान्त तथा काव्यगत विशेषताएँ।	15	1
4.	**केशवदास :** **रामचन्द्रिका– अंगद–रावण संवाद** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– केशव का आचार्यत्व; राम–काव्य–परम्परा और 'रामचन्द्रिका'; काव्य–वैभव; संवाद–योजना।	15	1
5.	**भूषण : शिवा बावनी** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– रीतिकालीन कविता और भूषण; भूषण के काव्य में युगबोध; भूषण–काव्य की अन्तर्वस्तु; भूषण की काव्यकला।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन श्रेष्ठ प्रबन्ध–काव्यों को इस पत्र के अन्तर्गत चयनित किया गया है। इनके अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को प्रबन्ध–काव्यों के स्वरूप एवं महत्ता का परिज्ञान हो सकेगा।
2. मध्यकालीन जीवन की दिशा बदल देने के साथ ही समाज पर आज तक अपना प्रभाव बनाये हुए इन प्रबन्ध–काव्यों की विशेषताओं से विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन जीवन–मूल्यों तथा काव्य–मूल्यों का भी विद्यार्थियों को ज्ञान हो सकेगा।

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य का आदिकाल; डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. पृथ्वीराज रासो की भाषा; डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. रामलाल वर्मा, जायसी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1979।
4. मुंशीलाल पाठक, मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
5. मध्यकालीन धर्म साधना; डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
6. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937।
7. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953।
8. मध्यकालीन काव्य आन्दोलन; डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र।
9. साहित्य विमर्श का विवेक; डॉ. सुशील कुमार शर्मा, मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली।
10. सामाजिक समरसता में मुसलमान हिन्दी कवियों का योगदान; डॉ लखनलाल खरे, रजनी प्रकाशन, दिल्ली।
11. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
12.

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
द्वितीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC413**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **विविध गद्य विधाएं**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : नाटक, कहानी एवं उपन्यास जैसी विधाओं के अतिरिक्त आधुनिक काल में अनेक गद्य विधाएं अस्तित्व में आयी हैं। इनमें से कतिपय प्रमुख गद्य विधाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना तथा उनके प्रति आलोचनात्मक विवेक के साथ अध्ययन की दृष्टि उत्पन्न करना ही इस पत्र का उद्देश्य है।			
केडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	केडिट संख्या
1.	**आत्मकथा :** मन्नू भण्डारी–**एक कहानी यह भी** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** हिन्दी आत्मकथा का स्वरूप और 'एक कहानी यह भी'; 'एक कहानी यह भी' में मन्नू भण्डारी का व्यक्तित्व; स्त्री–विमर्श का परिप्रेक्ष्य और मन्नू भण्डारी की आत्मकथा; 'एक कहानी यह भी' की शिल्प–संरचना।	15	1
2.	**जीवनी :** शिवरानी देवी–**प्रेमचन्द घर में** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** हिन्दी जीवनी साहित्य और 'प्रेमचन्द घर में'; 'प्रेमचन्द घर में' जीवनी के आधार पर प्रेमचन्द का व्यक्तित्व और कृतित्व; जीवनी के तत्त्वों के आधार पर 'प्रेमचन्द घर में' की समीक्षा; 'प्रेमचन्द घर में' की भाषा–शैली।	15	1
3.	**निबन्ध :** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–**भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है** बालमुकुन्द गुप्त–**एक दुराशा** रामचन्द्र शुक्ल–**कविता क्या है** राजेन्द्र प्रसाद–**शिक्षा और संस्कृति** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** निबन्धों का प्रतिपाद्य एवं समीक्षा; निबन्धकारों की निबन्ध–कला।	15	1
4.	**ललित निबन्ध :** हजारी प्रसाद द्विवेदी–**नाखून क्यों बढ़ते हैं** विद्यानिवास मिश्र–**मेरे राम का मुकुट भीग रहा है** कुबेरनाथ राय–**उत्तराफाल्गुनी के आस–पास** विवेकी राय–**उठ जाग मुसाफिर** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** निबन्धों का प्रतिपाद्य एवं समीक्षा; निबन्धकारों की निबन्ध–कला।	15	1

5.	**विविध गद्य :** महादेवी वर्मा–**ठकुरी बाबा** (रेखाचित्र) रामधारी सिंह दिनकर–**संस्कृति के चार अध्याय** (कर्मठ वेदान्त, स्वामी विवेकानन्द) हरिशंकर परसाई–**भोलाराम का जीव** (व्यंग्य) राहुल सांकृत्यायन–**मेरी तिब्बत यात्रा** (यात्रा–वृतान्त) **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** विधागत प्रकृति के आधार पर रचनाओं की समीक्षा तथा रचनाकारों का वैशिष्ट्य।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. कथेतर गद्य साहित्य का विद्यार्थियों को ज्ञान हो सकेगा।
2. गद्य की विविध विधाओं से अवगत होकर साहित्य–सृजन के विविध आयामों को विद्यार्थी जान–समझ सकेंगे।
3. उनके भीतर साहित्य–सृजन की प्रेरणा और क्षमता जाग्रत हो सकेगी।
4. गद्य साहित्य के अध्ययन का आलोचनात्मक विवेक उत्पन्न हागा।

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास; डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
2. रंग दर्शन; नेमिचन्द्र जैन
3. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना; हज़ारीप्रसाद द्विवेदी राजकमल, दिल्ली।
4. रामचन्द्र शुक्ल; मलयज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. हिन्दी नाटक; बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. हिन्दी का गद्य साहित्य; रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7 हिन्दी : विन्यास और विकास; रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. मोहन राकेश और उनके नाटक; गिरीश रस्तोगी, लोक भारती।
9. हिन्दी ललित निबन्ध : स्वरूप विवेचन; वेदवती राठी, लोक भारती।
10. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण; विजयमोहन सिंह, ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली।
11. हिन्दी का गद्य पर्व; नामवर सिंह, राजकमल।
12. हजारीप्रसाद द्विवेदी : समग्र पुनरावलोकन; चौकीराम मिश्र, लोकभारती।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
द्वितीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC414**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : भारतीय काव्यशास्त्र की ही भांति पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा भी अत्यन्त समृद्ध है। आधुनिक साहित्य का सम्यक् अध्ययन बिना पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समुचित ज्ञान के नहीं हो सकता। अतः इस पत्र में पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त, सिद्धान्तकार तथा महत्वपूर्ण मान्यताओं को सम्मिलित किया गया है।			
केडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	केडिट संख्या
1.	प्लेटो– अनुकरण सिद्धांत। अरस्तू की काव्य–विषयक मान्यताएं– अनुकरण, विरेचन और त्रासदी। लोंजइनस– उदात्त तत्व। क्रोचे– अभिव्यंजनावाद।	15	1
2.	आई. ए. रिचर्डस– सम्प्रेषण सिद्धान्त; मूल्य सिद्धांत तथा काव्य भाषा। टी. एस. इलियट– परम्परा और निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत। कॉलरिज– कल्पना सिद्धान्त। वर्ड्सवर्थ– काव्यभाषा।	15	1
3.	मैथ्यू ऑर्नल्ड के साहित्य सिद्धान्त। पाश्चात्य आलोचना के कतिपय उपकरण : मिथक; फन्तासी; कल्पना; प्रतीक और बिम्ब; बिम्ब–प्रतीकवाद।	15	1
4.	विविध साहित्यिक वाद : आदर्शवाद; यथार्थवाद; मनोविश्लेषणवाद; स्वच्छन्दतावाद; अस्तित्ववाद; संरचनावाद एवं उत्तर–संरचनावाद।	15	1
5.	समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएं : विडम्बना (आइरनी); अजनबीपन (एलियशन); विसंगति (एब्सर्ड); अन्तर्विरोध (पैराडॉक्स); विखण्डन (डिकन्स्ट्रक्शन); आधुनिकता; उत्तर आधुनिकता।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं को जान सकेंगे।
2. भारतीय के साथ–साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अध्ययन से काव्यशास्त्र की एक सम्यक् समझ उनमें विकसित हो सकेगी।
3. आधुनिक साहित्य के अध्ययन एवं समीक्षा हेतु इस पत्र का अध्ययन सहायक सिद्ध होगा।

सहायक ग्रन्थ :

1. पाश्चात्य समीक्षा के चार सूत्रधार; डॉ. उदयशंकर श्रीवास्तव, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली।
2. पाश्चात्य काव्य चिन्तन; डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
3. पाश्चात्य साहित्य चिन्तन; निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्लीं
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा; रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र; गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : नयी प्रवृत्तियां; राजनाथ शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष			
द्वितीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNP415**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी शोध परियोजना**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है। उच्च शिक्षा का महत् उद्देश्य शोध है। किसी विषय पर शोध परियोजना करने से विद्यार्थियों में शोध–क्षमता का विकास हो और वे आगे चलकर एक अच्छे शोधकर्ता बन सकें, इस दृष्टि से इस पत्र की आयोजना पाठ्यक्रम में की गयी है।			
केडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	केडिट संख्या
1.	इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे और उस कार्य के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेंगे। शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा और विद्यार्थियों की मौखिक परीक्षा भी ली जायेगी। इस पत्र हेतु कुल पूर्णांक 100 होंगे, जिनमें से शोध–प्रबन्ध का मूल्यांकन 50 अंकों में किया जायेगा और 25 अंकों के लिये मौखिक परीक्षा होगी। शेष 25 अंक विद्यार्थी को तभी मिलेंगे, जब शोध परियाजना से सम्बन्धित विषय पर उसका कम–से–कम एक शोधपत्र यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित या पीयर रिव्यूड पत्रिका में प्रकाशित होगा।	15	08 (4+4)

पाठ्यक्रम परिणाम :

4. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
5. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की बारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
6. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
तृतीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC501**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता का इतिहास**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल को आ. रामचन्द्र शुक्ल ने गद्यकाल की संज्ञा से विभूषित किया है तो इसका कारण आधुनिक युग में हुआ गद्य साहित्य का अपूर्व विकास है। हिन्दी गद्य के विकास में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। अतः हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित इस पत्र में विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता के इतिहास से परिचित कराया जायेगा।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	हिन्दी गद्य का प्राचीन स्वरूप और परम्परा; आधुनिककालीन परिस्थितियों का हिन्दी गद्य के विकास में योगदान; भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य और गद्यकार; भारतेन्दुयुगीन हिन्दी गद्य एवं गद्यकार; आधुनिककालीन हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक उन्नयन में विभिन्न व्यक्तियों एवं संस्थाओं की भूमिका; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का हिन्दी गद्य को अवदान; हिन्दी गद्य के विकास में आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी की भूमिका।	15	1
2.	हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं– नाटक; एकांकी; उपन्यास; कहानी तथा निबन्ध का उद्भव और विकास।	15	1
3.	हिन्दी गद्य की विविध विधाओं– संस्मरण; जीवनी; आत्मकथा; रिपोर्ताज; रेखाचित्र, डायरी तथा यात्रा–साहित्य का उद्भव और विकास।	15	1
4.	भारत में प्रेस का उदय और हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ; हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास; भारतेन्दुकालीन हिन्दी पत्र–पत्रिकाएं और उनके सम्पादक; द्विवेदीयुगीन हिन्दी पत्रकारिता और सरस्वती पत्रिका; स्वातन्त्र्य–पूर्व हिन्दी पत्रकारिता; भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका।	15	1
5.	स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता; हिन्दी गद्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान; समकालीन हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम; समकालीन विमर्श और हिन्दी पत्रकारिता; हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप तथा परिदृश्य।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिककाल में विकसित हुई गद्य की समृद्ध परम्परा को जान सकेंगे।
2. हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि, आधुनिक काल में विभिन्न चरणों में उसके उदय एवं विकास के लिये प्रेरक परिस्थितियों, उसकी विशेषताओं तथा प्रभावों को समझ सकेंगे।

3. हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास तथा उसकी विभिन्न सन्दर्भों में राष्ट्रीय भूमिका से भी विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
4. हिन्दी भाषा तथा उसमें रचित साहित्य की विरासत पर गर्व कर सकेंगे।

सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य का भूमिका; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।
5 हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास; डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1, 2; विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी।
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास; सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास; डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।
9 हिन्दी साहित्यः बीसवीं शताब्दी; आ. नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10 हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन; नलिन विलोचन शर्मा; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
11 हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास; डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। प्रथम एवं द्वितीय खण्ड।

<table>
<tr><td colspan="3">एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">तृतीय सेमेस्टर</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNC502</td><td>पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
आधुनिक काव्य</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता का एक बहुत महत्त्वपूर्ण चरण है। द्विवेदीयुग के आगे काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली के सामर्थ्य की पहचान कराने और उसे अनुरूप प्रतिष्ठा दिलाने में छायावादी कवियों की बड़ी भूमिका है। अतः दो प्रतिनिधि द्विवेदीयुगीन कवियों के साथ ही आधुनिक हिन्दी कविता के स्वर्ण युग कहे जाने वाले छायावाद युग के स्तम्भ माने जाने वाले चारों प्रसिद्ध कवियों की कविताओं से हिन्दी के विद्यार्थियों को परिचित कराना ही इस पत्र का उद्देश्य है।</td><td></td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 5</td><td>पूर्णांक % 25+75</td><td>उत्तीर्णांक : 33 प्रतिशत</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या : 75</td><td></td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td>पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td><td>क्रेडिट संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td>**क अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध–प्रिय प्रवास**
पाठांश–**षष्ठ सर्ग; छन्द सं.–26 से 83।**
ख मैथिलीशरण गुप्त–साकेत
पाठांश– **नवम् सर्ग** से चयनित अंश।
गीत : वेदने तू भी भली बनी; दोनों ओर प्रेम पलता है; निरख सखी ये खंजन आये; शिशिर न फिर गिरि वन में; मुझे फूल मत मारो; यही आता है इस मन में।
आलोचना के बिन्दु : हरिऔध की काव्य–कला; प्रिय प्रवास का महत्त्व; प्रिय प्रवास की राधा। आधुनिक हिन्दी कविता को गुप्त जी का अवदान; मैथिलीशरण गुप्त का काव्य–सौष्ठव; साकेत के नवम् सर्ग की विशेषताएं; उर्मिला का विरह–वर्णन।</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>**जयशंकर प्रसाद–कामायनी**
पाठांश–**श्रद्धा सर्ग**
आलोचना के बिन्दु : प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना; आधुनिक युग के महाकाव्य के रूप में 'कामायनी' ('कामायनी' का प्रबन्ध–विन्यास); कामायनी में प्रसाद का जीवन–दर्शन एवं सौन्दर्य–दृष्टि; कामायनी में समरसता और आनन्दवाद; कामायनी में रूपक तत्त्व; कामायनी का आधुनिक सन्दर्भ और विश्व–दृष्टि।</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>**सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'– राम की शक्ति–पूजा**
आलोचना के बिन्दु : हिन्दी कविता को निराला की देन; निराला की काव्यगत विशेषताएं; निराला की प्रगति–चेतना और प्रयोग के विविध आयाम; निराला की लम्बी कविताएं; 'राम की शक्ति–पूजा' का प्रतिपाद्य एवं महत्त्व; निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना।</td><td>15</td><td>1</td></tr>
</table>

4.	**सुमित्रानंदन पंत–पल्लव** **पाठ्य कविताएं–** प्रथम रश्मि; परिवर्तन; मौन–निमन्त्रण **आलोचना के बिन्दु :** पन्त जी की काव्ययात्रा; पन्त और छायावाद; पन्त का प्रकृति–चित्रण; पन्त जी का काव्य–सौन्दर्य; पन्त–काव्य में कल्पना; पन्त जी की काव्य–भाषा; पठित कविताओं का प्रतिपाद्य।	15	1
5.	**महादेवी वर्मा– सन्धिनी** **पाठ्य कविताएं–** बीन भी हूं मैं तुम्हारी रागिनी भी हूं; फिर विकल हैं प्राण मेरे; मैं नीर भरी दुख की बदली; जाग तुझको दूर जाना; यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो; पन्थ होने दो अपरिचित। **आलोचना के बिन्दु :** महादेवी वर्मा और छायावाद; रहस्यवाद और महादेवी वर्मा; महादेवी का काव्य और वेदना; महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताएं; महादेवी जी की प्रतीक–योजना; गीतात्मकता।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. आधुनिककालीन हिन्दी कविता विशेषकर खड़ी बोली की कविता से विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
2. सामयिक परिस्थितियों में आधुनिक हिन्दी कविता की प्रभावकारी भूमिका को वे जान सकेगे।
3. हिन्दी कविता की सामर्थ्य से अवगत होकर वे उस पर गर्व कर सकेगे।
4. विद्यार्थियों में काव्य–समीक्षा का विवेक विकसित होगा और वे आधुनिक मानदण्डों पर काव्य की परख करना सीख सकेगे।
5. सृजनात्मक क्षमता वाले विद्यार्थियों में काव्य–सृजन की दृष्टि विकसित हो सकेगी।

सहायक ग्रन्थ :

1. साकेत : एक अध्ययन; डॉ. नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. साकेत के नवम सर्ग का काव्य वैभव; कन्हैयालाल सहल, हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली।
3. जयशंकर प्रसाद; नन्द दुलारे वाजपेयी।
4. प्रसाद और उनका साहित्य; विनोद शंकर व्यास
5. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला; डॉ. रामेश्वर खण्डेलवाल
6. प्रसाद का काव्य; डॉ. प्रेमशंकर; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. निराला की साहित्य साधना, भाग–1, 2, 3; डॉ. रामविलास शर्मा
8. निराला : एक आत्महन्ता आस्था; दूधनाथ सिंह; लोक भारती, इलाहाबाद।
9. छायावाद; डॉ. नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. क्रांतिकारी कवि निराला; डॉ. बच्चन सिंह;
11. कामायनी अनुशीलन; रामलाल सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
12. राम की शक्तिपूजा; डॉ. नगेन्द्र; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
13. महादेवी का काव्य सौष्ठव; कुमार विमल; अनुपम प्रकाशन, पटना।
14. महादेवी; दूधनाथ सिंह; राजकमल, इलाहाबाद।
15. कवि सुमित्रानंदन पंत; नंद दुलारे वाजपेयी; प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
16. सुमित्रानंदन पंत : कवि और काव्य; शारदालाल प्रकाशन, दिल्ली।
17. महादेवी; इन्द्रनाथ मदान; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
18. हरिऔध के महाकाव्यों की नारी पात्र; रेणु श्रीवास्तव, अमन प्रकाशन, कानपुर।
19. दिनकर का कुरुक्षेत्र और मानवतावाद; डॉ. मोहसिन खान

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
तृतीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC503 (क)**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **भाषा विज्ञान**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : भाषा विज्ञान एक महत्वपूर्ण विषय है। साहित्य के विद्यार्थी को इसका मूलभूत ज्ञान होना एक तरह से आवश्यक सा है। इसी उद्देश्य से इस पत्र की रचना की गयी है जिससे कि विद्यार्थी को भाषा विज्ञान का ज्ञान अवश्य हो सके।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**भाषा का अर्थ एवं स्वरूप :** भाषा का अर्थ एवं विकास के सोपान; भाषा की विशेषताएं; भाषा के विविध रूप; भाषा और विभाषा; भाषा की उत्पत्ति के सिद्धान्त; भाषा की परिवर्तनशीलता और परिवर्तन के कारण; भाषाओं का वर्गीकरण।	15	1
2.	**भाषा विज्ञान :** भाषा विज्ञान : अभिप्राय एवं वैशिष्ट्य; भाषा विज्ञान के अंग तथा प्रयोजन; भाषा–विज्ञान की शाखाएं– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक; भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध; भाषा विज्ञान का संक्षिप्त इतिहास।	15	1
3.	**ध्वनि–विज्ञान और रूप–विज्ञान :** हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण– स्वर और व्यंजन; ध्वनियों के गुण एवं नियम; स्वनिम की व्यवहारिक उपयोगिता तथा विशेषताएं; ध्वनि–परिवर्तन के कारण; ध्वनि–परिवर्तन की दिशाएं। रूप–विज्ञान : रूपिम की अवधारणा; रूपिम के प्रकार; शब्द और पद में अन्तर; पद–सम्बन्धी रूप–परिवर्तन के कारण।	15	1
4.	**वाक्य–विज्ञान और अर्थ विज्ञान :** वाक्य–विज्ञान : वाक्य–विज्ञान की परिभाषा; वाक्य की आवश्यकताएं; वाक्य के अंग; वाक्यों के प्रकार; वाक्य रचना में परिवर्तन के कारण। अर्थ–विज्ञान : अर्थ की प्रतीति; शब्द और अर्थ का सम्बन्ध; अर्थबोध के साधन; अर्थ–परिवर्तन की दिशाएं; अर्थ परिवर्तन के कारण।	15	1
5.	**हिन्दी भाषा एवं लिपि :** हिन्दी भाषा का विकास; हिन्दी की बोलियों का परिचय (पूर्वी एवं पश्चिमी हिन्दी के विशेष संदर्भ में)। भारत में लिपियों का विकास; देवनागरी लिपि का सामान्य परिचय; विशेषताएं; सुधार के प्रयत्न तथा देवनागरी लिपि का मानकीकरण।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी भाषा विज्ञान, उसके अवयवों और उसके महत्त्व को जान सकेगे।
2. देवनागरी लिपि के इतिहास और उसकी विशेषताओं से भी अवगत हो सकेंगे।
3. विद्यार्थियों में आगे चलकर स्वतन्त्र रूप से भाषा विज्ञान के व्यापक अध्ययन तथा उस क्षेत्र में कार्य करने की रुचि और क्षमता का विकास होगा।

सहायक ग्रंथ :

1. भाषा विज्ञान की भूमिका; डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, अनुपम प्रकाशन, पटना।
2. भाषा विज्ञान; डॉ. भोलानाथ तिवारी; किताब महल, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र; डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. हिन्दी भाषा; डॉ. भोलानाथ तिवारी; किताब महल, इलाहाबाद।
5. हिन्दी भाषाः उद्‌भव एवं विकास; डॉ. हरदेव बाहरी।
6. हिन्दी भाषा का इतिहास; धीरेन्द्र वर्मा; हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद।
7. आधुनिक भाषा विज्ञान; डॉ. राजमणि शर्मा; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी भाषा : स्वरूप और विकास; कैलाश चन्द्र भाटिया।
9. भाषा और समाज; रामविलास शर्मा; राजममल प्रकाशन, दिल्ली।
10. हिन्दी भाषा; हरदेव बाहरी; अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
चतुर्थ सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC503 (ख)**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : हिन्दी भाषा के अनेक आयाम हैं। इस पत्र में विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ ही हिन्दी क्षेत्र, हिन्दी भाषा का स्वरूप, उसके प्रयोग के विविध रूप आदि का अध्ययन कराया जायेगा; साथ ही देवनागरी लिपि से भी सम्बन्धित महत्तवपूर्ण जानकारियां देना इस पत्र का उद्देश्य है।			
केडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	केडिट संख्या
1.	**हिन्दी का उद्गम :** हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएं, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएं– शौरसेनी, अर्द्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएं; अपभ्रंश, अवहट्ट और पुरानी हिन्दी का सम्बन्ध; आधुनिक आर्यभाषाएं और उनका वर्गीकरण	15	1
2.	**हिन्दी–क्षेत्र :** हिन्दी का भौगोलिक विस्तार; हिन्दी की उपभाषाएं– पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी वर्ग और उनकी बोलियां; खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएं; हिन्दी के विविध रूप–हिन्दी, उर्दू, दक्खिनी, हिन्दुस्तानी।	15	1
3.	**हिन्दी का भाषिक स्वरूप :** हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था; खण्ड्य और खण्ड्येतर, हिन्दी ध्वनियों के वर्गीकरण का आधार, हिन्दी शब्द–रचना–उपसर्ग, प्रत्यय, समास। हिन्दी की रूप–रचना : लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया–रूप; हिन्दी वाक्य–रचना।	15	1
4.	**हिन्दी भाषा–प्रयोग के विविध रूप :** बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और सम्पर्क–भाषा; संचार–माध्यम और हिन्दी; कम्प्यूटर और हिन्दी; हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।	15	1
5.	**देवनागरी लिपि :** देवनागरी लिपि का उद्भव और विकास; देवनागरी लिपि की विशेषताएं; देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता; देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयत्न; देवनागरी लिपि का मानकीकरण।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के उद्गम और विकास के बारे में जान सकेंगे। साथ ही उसकी बोलियों के बड़े परिवार से भी उनका परिचय हो सकेगा।

2. हिन्दी के भाषिक स्वरूप के साथ ही उसके प्रयोग के विविध रूपों से भी वे अवगत होकर अपनी भाषिक दक्षता बढ़ा सकेंगे।
3. संस्कृत–हिन्दी सहित अन्य अनेक भाषाओं के लिये प्रचलित देवनागरी लिपि से सम्बन्धित बहुत सी महत्त्वपूर्ण जानकारियां भी विद्यार्थियों को हो सकेंगीं, जिससे वे और अधिक रुचि के साथ उसके उत्थान के लिये काम करेंगे।

सहायक ग्रंथ :

1. भाषा विज्ञान की भूमिका; डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, अनुपम प्रकाशन, पटना।
2. भाषा विज्ञान; डॉ. भोलानाथ तिवारी; किताब महल, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र; डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. हिन्दी भाषा; डॉ. भोलानाथ तिवारी; किताब महल, इलाहाबाद।
5. हिन्दी भाषाः उद्‌भव एवं विकास; डॉ. हरदेव बाहरी।
6. हिन्दी भाषा का इतिहास; धीरेन्द्र वर्मा; हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद।
7. आधुनिक भाषा विज्ञान; डॉ. राजमणि शर्मा; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी भाषा : स्वरूप और विकास; कैलाश चन्द्र भाटिया।
9. भाषा और समाज; रामविलास शर्मा; राजममल प्रकाशन, दिल्ली।
10. हिन्दी भाषा; हरदेव बाहरी; अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
तृतीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC503 (ग)**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी साहित्य और सिनेमा**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : आधुनिक युग में सिनेमा मनोरंजन का एक प्रमुख माध्यम है। हिन्दी सिनेमा की लोकप्रियता आज देश ही नहीं, विदेशों तक प्रसृत है। न सिर्फ यह लोगों का मनोरंजन करता है, अपितु जनमानस को काफी प्रभावित भी करता है। हिन्दी सिनेमा और साहित्य का आपस में गहरा सम्बन्ध है। हिन्दी के विद्यार्थियों को इन्हीं सम्बन्धों का बोध कराने के उद्देश्य से इस पत्र की रचना की गयी है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**हिन्दी सिनेमा और साहित्य का अन्तर्सम्बन्ध :** हिन्दी सिनेमा का उद्भव और विकास; हिन्दी सिनेमा के विविध आयाम; सिनेमा और साहित्य में अन्तर तथा पारस्परिक सम्बन्ध; हिन्दी सिनेमा के विकास में हिन्दी के साहित्यकारों का योगदान; हिन्दी सिनेमा और साहित्य के अन्तः–सम्बन्धों की परम्परा; हिन्दी की लोकप्रियता में हिन्दी सिनेमा का योगदान।	15	1
2.	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों का समीक्षात्मक अध्ययन :** तीसरी कसम; गोदान; चित्रलेखा; देवदास; पिंजर; शतरंज के खिलाड़ी; रजनीगन्धा; सारा आकाश।	15	1
3.	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो साहित्यिक कृतियों पर बने दूरदर्शन धारावाहिकों का समीक्षात्मक अध्ययन :** तमस; निर्मला	15	1
4.	**हिन्दी फिल्मों के गीत :** फिल्मी गीतों एवं साहित्यिक गीतों में अन्तर; हिन्दी के साहित्यिक गीतों का हिन्दी फिल्मों पर प्रभाव; फिल्मी गीत और हिन्दी–उर्दू भाषा; हिन्दी लोकगीतों का फिल्मी गीतों पर तथा फिल्मी गीतों का हिन्दी लोकगीतों पर प्रभाव; हिन्दी फिल्मी गीतों की लोकप्रियता; फिल्मी गीतों के रचयिता प्रमुख कवि।	15	1
5.	**कथा एवं पटकथा :** पटकथा : अर्थ एवं आयाम; कथा एवं पटकथा का स्वरूप तथा लेखन–कला; कथा के पटकथा में रूपान्तरण की कला; पटकथा एवं संवाद–लेखन; साहित्य एवं सिनेमा की भाषा में अन्तर; प्रमुख पटकथा लेखक हिन्दी साहित्यकार।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आधुनिक युग में मनोरंजन एवं जनसंचार के एक बहुत ही प्रभावी माध्यम हिन्दी सिनेमा का साभिप्राय अध्ययन करे सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य और सिनेमा के बहुआयामी अन्तर्सम्बन्धों को जान–समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थियों में सृजनात्मक लेखन तथा सिनेमा में कैरियर–निर्माण की सम्भावनाएं ज्रगत होंगीं।

<table>
<tr><td colspan="4">एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">तृतीय सेमेस्टर</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNC504 (क)</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
भारतीय साहित्य</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
भारत बहुभाषा भाषी देश है, किंतु भारत की विभिन्न संस्कृतियों में एक प्रकार की सूत्रबद्धता है। भारत की विभिन्न भाषाओं में साहित्य–सृजन हो रहा है और उसमें से बहुत सा महत्त्वपूर्ण साहित्य अब हिन्दी में अनूदित रूप में उपलब्ध है। भारत के किसी भी क्षेत्र और भाषाभाषी छात्र–छात्रा के लिये यह आवश्यक है कि वह अपनी भाषा से इतर दूसरी भारतीय भाषाओं का साहित्य भी पढ़े–समझे। हिन्दी के विद्यार्थी का अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य से कुछ परिचय हो सके, इसी दृष्टि से इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत भारतीय साहित्य की कतिपय प्रमुख रचनाओं का समावेश किया जा रहा है। इनके माध्यम से विद्यार्थी भारतीय साहित्य से कुछ–न–कुछ परिचित हो सकेंगे और उनमें उसके और अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत हो सकेगी।</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 5</td><td>पूर्णांक : 25+75</td><td>उत्तीर्णांक : 33 प्रतिशत</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">कुल व्याख्यान संख्या : 75</td><td></td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="2">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td><td>क्रेडिट संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="2">एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में भारत; भारतीयता एवं भारतीय साहित्य की अवधारणा; भारतीय साहित्य की परम्परा; भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं; बहुभाषिकता और भारतीय साहित्य; बहुसांस्कृतिकता और भारतीय साहित्य। भारतीय साहित्य–संस्कृति में एकतामूलक तत्व; भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब ।</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>2.</td><td colspan="2">कविता :
नीलमणि फूकन– कविता
कुवेम्पु– कल्कि</td><td>15</td><td>1</td></tr>
</table>

	सीताकान्त महापात्र– **धान–कटाई; वर्षा की सुबह** चन्द्रकान्ता– **निष्काषितों की बस्ती में** उमाशंकर जोशी– **वर दे इतना; छोटा मेरा खेत** काजी नजरुल इस्लाम– **किसका है यह देश; हे पार्थ–सारथी; साम्यवाद** अशाङ्बम मीनकेतन सिंह– **आह्वान** **पाठ्य–पुस्तक :** आधुनिक भारतीय कविता; सम्पादक– डॉ. अवधेश नारायण मिश्र, डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी **आलोचना के बिन्दु :** निर्धारित कवियों का साहित्यिक परिचय और पठित कविताओं का प्रतिपाद्य एवं साहित्यिक सौन्दर्य		
3.	**नाटक :** **गिरीश कर्नाड–हयवदन**	15	1
4.	**उपन्यास :** कन्हैयालाल मणिक लाल मुंशी–जय सोमनाथ	15	1
5.	**कहानी :**	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. हिन्दी साहित्य के साथ–साथ विद्यार्थी इस पत्र के माध्यम से भारतीय साहित्य की कतिपय प्रतिनिधि रचनाओं का अध्ययन कर उसके बारे में जान सकेंगे।
2. विद्यार्थी भारतीय साहित्य में निहित एकता विधायक तत्त्वों को जानकर विभिन्न भाषाओं के साहित्य और साहित्यकारों से तादात्म्य स्थापित कर सकेंगे तथा उनमें उसके व्यापक अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न हो सकेगी।
3. विद्यार्थियों में भारत, भारतीयता एवं भारतीय साहित्य के प्रति एक गर्व का भाव उत्पन्न होगा तथा उनमें 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना सबल होगी।

सहायक ग्रंथ :

1. आज का भारतीय साहित्य, अनुवाद; प्रभाकर माचवे
2. भारतीय साहित्य; रामछबीला त्रिपाठी
3. भारतीय साहित्य; मूलचंद गौतम
4. भारतीय साहित्य के अध्ययन की नई दिशाएँ; प्रदीप श्रीधर
5. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास ; डॉ. नगेंद्र
6. भारतीय साहित्य की अवधारणा; राजेंद्र मिश्र
7. भारतीय साहित्य की पहचान; सं. सियाराम तिवारी
8. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ; रामविलास शर्मा
9. भारतीय साहित्य; सं.– नगेंद्र; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
10. भारतीय साहित्य; भोला शंकर व्यास

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष		
तृतीय सेमेस्टर		
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC504 (ख)**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **तुलनात्मक साहित्य (हिन्दी एवं नेपाली)**	

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

तुलनात्मक अध्ययन आज के समय में एक आवश्यक तथा उपयोगी विषय है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में स्थित है, जो कि नेपाल के अत्यन्त निकट है। नेपाली भारतीय संविधान में स्वीकृत 22 भाषाओं में से एक है, तो नेपाल में भी हिन्दी बड़े पैमाने पर बोली–समझी जाती है। अतः इस पत्र के अन्तर्गत तुलनात्मक अध्ययन के लिये हिन्दी एवं नेपाली साहित्य को चुना गया है। साहित्य के माध्यम से भारतीय एवं नेपाली समाज–संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों से विद्यार्थियों को अवगत कराना इस पत्र का उद्देश्य है।

क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : **75**

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	तुलनात्मक अध्ययनः अर्थ एवं स्वरूप; तुलनात्मक अध्ययन का इतिहास; तुलनात्मक अध्ययन के विविध आयाम; भारत में तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता तथा क्षेत्र; हिन्दी में तुलनात्मक अध्ययन की परम्परा और उसका विकास।	15	1
2.	भारत एवं नेपाल के ऐतिहासिक सम्बन्ध; भारत एवं नेपाल की साझी सांस्कृतिक भूमि; नेपाल में हिन्दी और भारत में नेपाली भाषा; हिन्दी एवं नेपाली भाषा–साहित्य में अन्तर्निहित सांस्कृतिक एकता के सूत्र; हिन्दी एवं नेपाली साहित्य की साझी विरासत।	15	1
3.	हिन्दी एवं नेपाली के एक–एक कथाकार का तुलनात्मक अध्ययन	15	1
4.	हिन्दी एव नेपाली के एक–एक कवि का तुलनात्मक अध्ययन	15	1
5.	हिन्दी एवं नेपाली की एक–एक रचना का तुलनात्मक अध्ययन	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी तुलनात्मक अध्ययन के स्वरूप, उसमें निहित अध्ययन की सम्भावनाओं तथा इस तरह के अध्ययन की उपयोगिता को जान–समझ सकेंगे।
2. हिन्दी एवं नेपाली भाषा में उपलब्ध साहित्य की समृद्ध परम्परा तथा उसकी प्रमुख विशेषताओं से अवगत हो सकेगे।
3. हिन्दी एव नेपाली के चयनित साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों के अध्ययन द्वारा हिन्दी एवं नेपाली साहित्य, समाज तथा संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों को समझकर और भी पारस्परिक निकटता का अनुभव कर सकेंगे।

सहायक ग्रंथ :

1. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका; इन्द्रनाथ चौधरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य; इन्द्रनाथ चौधरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. तुलनात्मक साहित्य; डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ; के. सच्चिदानन्दन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ; रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
6. मराठी साहित्यः विविध परिदृश्य; चन्द्रकान्त वांदिवडेकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. भारतीय साहित्य; डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
8. तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ; सं. डॉ. म. ह, राजूरकर, डॉ. राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
9. भाषा और समाज; डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
तृतीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC504 (ग)**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **प्रवासी हिन्दी साहित्य**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : भारत से बाहर विदेशों में रहने वाले भारतवंशियों की एक बड़ी संख्या हिन्दी में रचनारत है। उनकी रचनाएं हिन्दी साहित्य को एक अलग आयाम देती हैं। जड़ों से बिछड़ने की पीड़ा, देश से बाहर रहते हुए भी देश से जुड़े रहने की ललक, दूर देश में होने वाली समस्याएं, नयी पीढ़ी में आ रहे बदलाव आदि प्रवासी साहित्य में अभिव्यंजित होते दिखते हैं। हिन्दी के विद्यार्थी प्रवासी साहित्य से भी परिचित हो सकें, इस उद्देश्य से इस पत्र की रचना की गयी है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	प्रवासी : अर्थ एवं क्षेत्र; प्रवासी साहित्य : अवधारणा और प्रकार; प्रवासी हिन्दी साहित्य का इतिहास; प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का हिन्दी के विकास में योगदान– उपन्यास, कहानी तथा कविता के विशेष सन्दर्भ में।	15	1
2.	**काव्य :** वह अनजान प्रवासी–अभिमन्यु अनत परिन्दा याद का; फिजा का रंग (गजलें)–उषाराजे सक्सेना आपकी पितृ–छाया; मां : एक याद–दीपिका जोशी संध्या कोटि–कोटि दीप जले; शिवास्ते पंथानः सन्तु–अश्विन गांधी तुम लन्दन आना चाहते हो; एक स्वप्न–निखिल कौशिक चलो आज हम दीप जलायें–सुरेन्द्रनाथ तिवारी	15	1
3.	**उपन्यास :** **लौटना**– सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली **आलोचना के बिन्दु :** सुषम बेदी की उपन्यास कला, पठित उपन्यास का सारांश, उपन्यास की समीक्षा, प्रतिपाद्य ।	15	1
4.	**कहानियां :** तेजेन्द्र शर्मा– कोख का किराया जकिया जुबेरी– सांकल जय वर्मा– गुलमोहर सुधा ओम ढींगरा– कौन सी जमीन अपनी पूर्णिमा बर्मन– यों ही चलते हुए आलोचना के बिन्दु : पठित कहानियों का सारांश, पठित कहानियों की समीक्षा, कहानीकारों की कहानी कला	15	1
5.	**नाटक :** रेस–अचला शर्मा	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी दूर देशों में बैठे हुए प्रवासी भारतीयों की संवेदना से तारतम्य बैठा सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के विस्तृत संसार से परिचित हो सकेंगे।
3. प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों के हिन्दी साहित्य के विकास में योगदान से अवगत हो सकेंगे।

सहायक ग्रंथ :

1. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य; सं. विमलेश कांति वर्मा
2. प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा; प्रो. प्रदीप श्रीधर
3. प्रवासी हिंदी साहित्य : विविध आयाम; डॉ. रमा
4. हिंदी का प्रवासी साहित्य; डॉ. कमलकिशोर गोयनका
5. प्रवासी लेखन : नई जमीन, नयाँ आसमान; अनिल जोशी
6. प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानियाँ: डॉ. सुरेंद्र गंभीर
7. प्रवासी श्रम इतिहास; धनंजय सिंह
8. प्रवास में; डॉ. उषाराजे सक्सेना
9. प्रवासी साहित्यकार मूल्यांकन, श्रृंखला–1; तेजेंद्र शर्मा, सं. डॉ. रमा, महेंद्र प्रजापति
10. प्रवासी साहित्य : भाव और विचार, संध्या गर्ग
11. हिंदी प्रवासी साहित्य (गद्य साहित्य);डॉ. कमलकिशोर गोयनका
12. प्रवासी की कलम से; बादल सरकार

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
तृतीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNP505**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी शोध परियोजना**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक :	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे।	15	4

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की वारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
तृतीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC511**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी आलोचना एवं आलोचक**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : संस्कृत में काव्यशास्त्र की एक सशक्त परम्परा रही है। हिन्दी की आधुनिक आलोचना भारतीय एवं पाश्चात्य– दोनों चिन्तन–सरणियों के समन्वय से और भी पुष्ट हुई है। यह जिन आलोचकों और आलोचना–कृतियों के माध्यम से समृद्ध हुई है, उनमें से कतिपय प्रमुख आलोचकों और उनके अवदान से अवगत कराना ही इस पत्र का उद्देश्य है।			
केडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	केडिट संख्या
1.	**हिन्दी आलोचना का विकास और मुख्य आलोचना–दृष्टियां :** हिन्दी आलोचना का आरम्भिक स्वरूप; हिन्दी आलोचना का विकास– शुक्ल पूर्व, शुक्ल युग एवं शुक्लोत्तर युग; आधुनिक हिन्दी आलोचना की सामर्थ्य; हिन्दी आलोचना की प्रमुख दृष्टियां– ऐतिहासिक, शास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, प्रभाववादी, रूपवादी तथा विमर्शवादी; हिन्दी आलोचना का समकालीन परिदृश्य।	15	1
2.	**हिन्दी के प्रमुख आलोचक :** 1. आ. रामचन्द्र शुक्ल **1.** डॉ. नन्ददुलारे बाजपेयी	15	1
3.	**हिन्दी के प्रमुख सांस्कृतिक आलोचक** 1. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी 2. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी	15	1
4.	**हिन्दी के प्रमुख मार्क्सवादी आलोचक :** 1. डॉ. रामविलास शर्मा 2. डॉ. नामवर सिंह	15	1
5.	**हिन्दी के प्रमुख रचनाकार आलोचक :** 1. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय **2.** गजानन माधव मुक्तिबोध	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी आलोचना के बहुआयामी विकास और मुख्य आलोचना–दृष्टियों से अवगत हो सकेंगे।
2. हिन्दी के प्रमुख आलोचकों के आलोचना–कर्म और उनकी विशेषताओं को जान सकेंगे।

3. प्रसिद्ध आलोचकों की आलोचना–दृष्टियों तथा पद्धतियों को जानकर स्वस्थ एवं श्रेष्ठ आलोचना–कर्म करने की ओर प्रवृत्त होंगे।

सहायक ग्रंथ :

1. कविता के नए प्रतिमान; डॉ. नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. आलोचक और आलोचना; बच्चन सिंह; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. हिन्दी आलोचना का विकास; नंदकिशोर नवल; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार; डॉ. रामचन्द्र तिवारी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य; डॉ. चौथीराम यादव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला।
6. तीसरा रुख; पुरुषोत्तम अग्रवाल; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. नई कविता और अस्तित्ववाद; रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी आलोचना; विश्वनाथ त्रिपाठी; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
9. इतिहास और आलोचना; नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. दूसरी परंपरा की खोज; नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
11. हिन्दी आलोचना का विकास; मधुरेश; लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
12. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना; रामविलास शर्मा; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
13. हिंदी के प्रहरी; रामविलास शर्मा, सं. विश्वनाथ त्रिपाठी; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
14. आलोचना की सामाजिकता; मैनेजर पाण्डेय; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
15. आलोचना और आलोचना; देवी शंकर अवस्थी; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
तृतीय सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC512**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **छायावादोत्तर काव्य**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : छायावादोत्तर हिन्दी काव्य बहुत व्यापक एवं विस्तीर्ण है। अतः कतिपय प्रतिनिधि कवियों और उनकी कविताओं के द्वारा इसकी प्रमुख विशेषताओं की जानकारी देना इस पत्र का उद्देश्य है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**रामधारी सिंह दिनकर–उर्वशी (तृतीय सर्ग)** **आलोचना के बिन्दु** : दिनकर की कविता की पृष्ठभूमि; दिनकर के काव्य में राष्ट्र–भाव; दिनकर की काव्यगत विशेषताएं; 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य एवं उद्देश्य	15	1
2.	**अज्ञेय–असाध्य वीणा** **आलोचना के बिन्दु** : अज्ञेय–काव्य में प्रयोगधर्मिता; अज्ञेय की काव्य–भाषा; अज्ञेय–काव्य में प्रकृति और प्रेम; असाध्य वीणा का प्रतिपाद्य और समीक्षा।	15	1
3.	**मुक्तिबोध–अंधेरे में** आलोचना के बिन्दु : मुक्तिबोध की कविता में समाज–बोध; मुक्तिबोध के काव्य में फैन्टेसी; मुक्तिबोध की काव्यगत विशेषताएं; 'अंधेरे में' कविता का प्रतिपाद्य और समीक्षा।	15	1
4.	**नागार्जुन**–कालिदास; बादल को घिरते देखा है; अकाल और उसके बाद; शासन की बन्दूक। आलोचना के बिन्दु : नागार्जुन के काव्य में यथार्थ–चेतना और काव्य–दृष्टि; नागार्जुन का काव्य–सौष्ठव;	15	1
5.	**धर्मवीर भारती**–टूटा पहिया; कविता की मौत; फागुन की शाम **रघुवीर सहा**य–स्वाधीन व्यक्ति; आत्महत्या के विरुद्ध आलोचना के बिन्दु : रघुवीर सहाय की कविता में राजनीतिक चेतना; रघुवीर सहाय की काव्य–भाषा; धर्मवीर भारती और नयी कविता; धर्मवीर भारती की काव्य–संवेदना; घर्मवार भारती का काव्य–शिल्प।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के द्वारा विद्यार्थी छायावाद के आगे की कविता की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियों को जान–समझ सकेंगे।
2. छायावादोत्तर प्रमुख कवियों के अवदान एवं उनकी काव्यगत विशेषताओं को जान सकेंगे।
3. आधुनिक काव्य–संवेदना से जुड़ सकेंगे।

4. काव्याभिव्यक्ति की नवन्नव और प्रभावी शिल्प–प्रविधियों को जान–समझकर अपने भीतर काव्य–समीक्षा तथा सृजन के आधुनिक कौशलों का विकास कर सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
चतुर्थ सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC513 (क)**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **प्रयोजनमूलक हिन्दी**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : हिन्दी भाषा का उपयोग अब केवल साहित्य–सृजन तक सीमित नहीं है। राजभाषा के रूप में भी उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वह रोजगार देने वाली भाषा भी है। विभिन्न कार्यालयी कार्यों, जनसंचार माध्यमों, अनुवाद–कार्य आदि दृष्टियों से उसका उपयोग होता है। विद्यार्थियों में कार्यालयी कार्यों तथा अन्य व्यवसायिक उपयोग हेतु दक्षता–विकास की दृष्टि से इस प्रश्नपत्र का निर्धारण किया गया है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**हिन्दी की संवैधानिक स्थिति :** राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा तथा हिन्दी; हिन्दी के क्षेत्र– क, ख, ग; भारतीय संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधान– अनुच्छेद 343 से 351 तक; राष्ट्रपति के आदेश सन् 1952, 1955 एवं 1960; राजभाषा अधिनियम–1963 यथा संशोधित–1967; राजभाषा नियम–1976 यथा संशोधित 1987; राजभाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका एवं चुनौतियां।	15	1
2.	**हिन्दी की प्रयोजनीयता :** प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा एवं विशेषताएं; प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप तथा प्रयुक्तियां; **कार्यालयी हिन्दी के प्रमुख प्रकार्य–** संक्षेपण, प्रारूपण, टिप्पणी, प्रतिवेदन, ज्ञापन, मसौदा, अनुस्मारक, अधिसूचना, पृष्ठांकन तथा पत्र–लेखन।	15	1
3.	**अनुवाद** : अनुवाद का अर्थ एवं क्षेत्र; अनुवाद की पद्धतियां; अनुवाद के प्रकार; अनुवाद एवं अनुवादक की कसौटी; अनुवाद की चुनौतियां; अनुवाद की भूमिका; अनुवाद एवं आशु अनुवाद; अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर।	15	1
4.	**पारिभाषिक पदावली :** वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'प्रशासनिक शब्दावली' से 200 पारिभाषिक वाक्यांश और अभिव्यक्तियां। (सूची संलग्न)	15	1
5.	**प्रयोजनमूलक हिन्दी और कम्प्यूटर :** कम्प्यूटर का सामान्य परिचय तथा उपयोगिता; हिन्दी कम्प्यूटिंग; इण्टरनेट की कार्यप्रणाली तथा लाभ; इण्टरनेट के उपयोग– ई–मेल करना तथा खोलना; ई–सामग्री का उपयोग और प्रयोग; वेब–पेज बनाना, वेबसाइट–निर्माण, वेब–पोर्टल बनाना; वेब–सामग्री–संग्रह; वेब–लेखन; वेब–पत्रकारिता; प्रमुख वेब–शब्दावली।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी विभिन्न माध्यमों और रूपों में हिन्दी की उपयोगिता को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में भाषिक कौशल का विकास होगा जो उन्हें रोजगार–क्षम बनाने में सहायक होगा।
3. विद्यार्थी हिन्दी में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग जानकर अपनी क्षमता को और बढ़ा सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
चतुर्थ सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC513 (क)**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **प्रयोजनमूलक हिन्दी**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : हिन्दी भाषा का उपयोग अब केवल साहित्य–सृजन तक सीमित नहीं है। राजभाषा के रूप में भी उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वह रोजगार देने वाली भाषा भी है। विभिन्न कार्यालयी कार्यों, जनसंचार माध्यमों, अनुवाद–कार्य आदि दृष्टियों से उसका उपयोग होता है। विद्यार्थियों में कार्यालयी कार्यों तथा अन्य व्यवसायिक उपयोग हेतु दक्षता–विकास की दृष्टि से इस प्रश्नपत्र का निर्धारण किया गया है।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**हिन्दी की संवैधानिक स्थिति :** राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा तथा हिन्दी; हिन्दी के क्षेत्र– क, ख, ग; भारतीय संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधान– अनुच्छेद 343 से 351 तक; राष्ट्रपति के आदेश सन् 1952, 1955 एवं 1960; राजभाषा अधिनियम–1963 यथा संशोधित–1967; राजभाषा नियम–1976 यथा संशोधित 1987; राजभाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका एवं चुनौतियां।	15	1
2.	**हिन्दी की प्रयोजनीयता :** प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा एवं विशेषताएं; प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप तथा प्रयुक्तियां; **कार्यालयी हिन्दी के प्रमुख प्रकार्य–** संक्षेपण, प्रारूपण, टिप्पणी, प्रतिवेदन, ज्ञापन, मसौदा, अनुस्मारक, अधिसूचना, पृष्ठांकन तथा पत्र–लेखन।	15	1
3.	**अनुवाद** : अनुवाद का अर्थ एवं क्षेत्र; अनुवाद की पद्धतियां; अनुवाद के प्रकार; अनुवाद एवं अनुवादक की कसौटी; अनुवाद की चुनौतियां; अनुवाद की भूमिका; अनुवाद एवं आशु अनुवाद; अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर।	15	1
4.	**पारिभाषिक पदावली :** वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'प्रशासनिक शब्दावली' से 200 पारिभाषिक वाक्यांश और अभिव्यक्तियां। (सूची संलग्न)	15	1
5.	**प्रयोजनमूलक हिन्दी और कम्प्यूटर :** कम्प्यूटर का सामान्य परिचय तथा उपयोगिता; हिन्दी कम्प्यूटिंग; इण्टरनेट की कार्यप्रणाली तथा लाभ; इण्टरनेट के उपयोग– ई–मेल करना तथा खोलना; ई–सामग्री का उपयोग और प्रयोग; वेब–पेज बनाना, वेबसाइट–निर्माण, वेब–पोर्टल बनाना; वेब–सामग्री–संग्रह; वेब–लेखन; वेब–पत्रकारिता; प्रमुख वेब–शब्दावली।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी विभिन्न माध्यमों और रूपों में हिन्दी की उपयोगिता को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में भाषिक कौशल का विकास होगा जो उन्हें रोजगार–क्षम बनाने में सहायक होगा।
3. विद्यार्थी हिन्दी में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग जानकर अपनी क्षमता को और बढ़ा सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी	
चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : MHNC513 (ख)	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **पटकथा एवं विज्ञापन–लेखन**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

हिन्दी सिनेमा और विज्ञापन की दुनिया आज रोजगार का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी में सिनेमा एवं विज्ञापन के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों से परिचित कराना और तदनुरूप उन्हें तैयार करना है। फिल्मों एवं टेलीविजन धारावाहिकों की पटकथाओं के लेखन से लेकर विज्ञापन–निर्माण तक के क्षेत्र, प्रविधि एवं सम्भावनाओं से उन्हें इसमें अवगत कराया जायेगा।

क्रेडिट : 5	पूर्णांक : 25+75	उत्तीर्णांक : 33 प्रतिशत

कुल व्याख्यान संख्या : 75

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	पटकथा का अर्थ एवं क्षेत्र; कथा एवं पटकथा; पटकथाकार के गुण; पटकथा का विचार (आइडिया); पटकथा के तत्त्व; पटकथा का स्वरूप और विस्तार; पटकथा–सम्बन्धी तकनीकी शब्दावली।	15	1
2.	पटकथा का प्रारूप : दृश्य–योजना; ढांचा; सार; दृश्य–लेखन; शूटिंग–स्क्रिप्ट। पटकथा–लेखन की प्रक्रिया : कथावस्तु; पात्र एवं उनमें अन्तर्सम्बन्ध।	15	1
3.	पटकथा–संवाद लेखन; संवादों की भाषा; कथा से पटकथा में रूपान्तरण की प्रक्रिया; वृत्तचित्र निर्माण; कैमरे का प्रयोग; डबिंग।	15	1
4.	विज्ञापन : अभिप्राय एवं स्वरूप; विज्ञापन का इतिहास; विज्ञापन का महत्त्व; विज्ञापन के प्रकार; विज्ञापन के माध्यम; विज्ञापन एजेंसियां; विज्ञापन की आचार संहिता और कानून।	15	1
5.	विज्ञापन लेखन– मुद्रित विज्ञापन लेखन; रेडियो विज्ञापन एवं विज्ञापन लेखन की विशेषताएं; रेडियो विज्ञापन लेखन का स्वरूप एवं आवश्यक तत्त्व; टेलीविज्ञापन की आवश्यकताएं और स्वरूप; टेलीविज्ञापन की प्रविधि एवं प्रकार; विज्ञापनों की भाषा।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी पटकथा–लेखन के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाओं को जानकर उस दिशा में अपने को तैयार कर सकेंगे।
2. विज्ञापन–लेखन के क्षेत्र एवं प्रविधि से परिचित हो सकेंगे।
3. पटकथा एवं विज्ञापन–लेखन की बारीकियों को समझकर सम्बन्धित क्षेत्र में अपने भीतर अपेक्षित कौशल का विकास कर सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी

चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC513** (ग)	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **मीडिया–लेखन**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

मीडिया का क्षेत्र आज के समय में रोजगार का तो एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है ही, कुछ अच्छा कर गुजरने का भी एक बेहतर माध्यम है। इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को इस क्षेत्र से अवगत कराना, इस क्षेत्र को व्यवसाय के लिये चयनित करने हेतु उन्हें प्रेरित करना तथा इस हेतु दक्ष बनाना है।

क्रेडिट : 5	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : **75**

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	मीडिया–लेखन : अभिप्राय एवं क्षेत्र; मीडिया–लेखन की विभिन्न विधाएं– समाचार लेखन, रेडियो वार्ता लेखन, नाटक लेखन, रेडियो नाटक लेखन, टी. वी. नाटक लेखन, नाट्य रूपान्तर, डॉक्यूमेंटरी लेखन, फीचर लेखन, फीचर फिल्म लेखन, विज्ञापन लेखन आदि।	15	1
2.	**सम्पादन कला :** सम्पादक का महत्त्व एवं कार्य, समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के विभिन्न स्तम्भों की योजना; समाचार सम्पादन के आधारभूत तत्त्व; संवाददाता की कार्यपद्धति एवं अर्हता; समाचार संकलन के विविध स्रोत; प्रेस एवं पत्रकारिता सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण शब्दावली।	15	1
3.	**रेडियो–लेखन :** वार्ता; नाटक; नाट्य–रूपान्तर; एंकरिंग; समाचार–वाचन; उद्घोषणा; भेंट–वार्ता; रूपक।	15	1
4.	**टेलीविजन एवं फिल्म लेखन :** डॉक्यूमेंटरी; फीचर; फिल्म तथा धारावाहिक लेखन; स्क्रिप्ट–लेखन; समाचार–वाचन; एंकरिंग; रिपोर्ट लेखन एवं प्रस्तुति तथा साक्षात्कार।	15	1
5.	**विविध कार्य:** इण्टरनेट लेखन के विविध आयाम; वेब लेखन; अनुवाद; कार्टूनिस्ट; एनीमेशन; फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी; विज्ञापन–लेखन; तकनीशियन; पुस्तक प्रकाशन; प्रूफ रीडिंग।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी मीडिया–लेखन के विभिन्न आयामों से अवगत हो सकेंगे।
2. मीडिया–लेखन की विविध प्रविधियों को सीख सकेंगे।
3. मीडिया के क्षेत्र में कार्यरत होने के लिये प्रेरित हो अपेक्षित दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी			
चतुर्थ सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC514** (क)	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE CODE) : **हिन्दी लोक–साहित्य**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : लोक साहित्य लोकरंजन का एक बहुत महत्वपूर्ण साधन रहा है। लोकरंजन के साथ लोकमंगल भी इसका प्रमुख साध्य तत्व है। नयी पीढ़ी शनैः–शनैः इससे विमुख एवं अनजान सी होती जा रही है। हिन्दी के विद्याथी के लोक साहित्य के प्रति इसी अपरिचय को दूर करने तथा उसकी उपयोगिता एवं वर्तमान में भी प्रासंगिकता का बोध कराने के उद्देश्य से इस पत्र की रचना की गयी है। इसके द्वारा विद्यार्थी लोक साहित्य के मात्र सैद्धान्तिक पक्ष से ही नहीं, अपितु उसके व्यवहारिक पक्ष से भी अवगत होकर उसे भली–भांति आत्मसात कर सकेंगे।			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**लोक साहित्य का वैशिष्ट्य :** साहित्य एवं लोक साहित्य; लोक साहित्य एवं संस्कृति; लोक साहित्य की प्रासंगिकता; लोक साहित्य में प्रगतिशील तत्व; हिन्दी लोक साहित्य के विविध आयाम; लोक साहित्य का राष्ट्रीय एवं वैश्विक सन्दर्भ; लोक साहित्य तथा पर्यावरण।	15	1
2.	**लोकगीत :** मोर चरखा के टूटल न तार; जेहि दिन धिया के जनम भइलै धरती दुखित भइलिन (भोजपुरी); छोटहि पेड़वा ढेकुलिया कै पतवा झपसि गइलै (भोजपुरी); बाबुल तेरा सींकों का घरवा रे (खड़ी बोली); मैं तौ पहले जनौंगी धीय री (ब्रज) पुरुब पछौहां मोरे बाबा के बखरिया (अवधी); गौं गौं पंचायत करा (गढ़वाली)। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : लोकगीतों में राष्ट्रीय चेतना; लोकगीतों में स्त्री–संवेदना; लोकगीतों में युगबोध; लोकगीतों में प्रकृति; लोकगीतों में लेकमंगलकारी भाव।	15	1
3.	**लोककथा :** राजा भोज और गंगू तेली (हिमाचली); बुद्धि बड़ी या धन (बुन्देली); पोपांबाई का राज (राजस्थानी); धान लोगे या चावल (खड़ी बोली); समधी की खातिर (ब्रज) **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : लोककथाओं में समाज–संस्कृति; लोककथाओं में प्रगतिशीलता; लोककथाओं में जीवन–मूल्य एवं दर्शन; लोककथाओं में बुद्धि–चातुर्य एवं साहसिकता; लोककथाएं एवं शास्त्रीय कथाएं।	15	1
4.	**लोकगाथा** : **'आल्हखण्ड'** (आल्हा मनौआ)–पं. रामलग्न पाण्डेय 'विशारद'	15	1

	प्रकाशक–श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार; कचौड़ी गली, वाराणसी–221001 **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : 'आल्ह खण्ड' : स्वरूप एवं प्रकृति; वीर रसात्मक काव्य परम्परा और 'आल्हखण्ड'; 'आल्हखण्ड' में सामन्ती संस्कृति; 'आल्हखण्ड' में वर्णन–वैविध्य; लोकगाथाओं की प्रभावशीलता और 'आल्हखण्ड'।		
5.	**लोकनाट्य :** **किसी सांगीत से अंश** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : लोकनाट्य : स्वरूप एवं प्रकार; लोकनाट्य के विविध आयामः लोकनाट्य एचं शास्त्रीय नाट्य; लोकनाट्यों में लोक–मूल्य एवं संस्कृति; लोकनाट्यों की साभिप्रायता; लोकनाट्य में रमणीय तत्व।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी हिन्दी लोक साहित्य की बहुत बड़ी थाती के महत्त्व को समझकर उस पर काम करने को प्रेरित होंगे।
2. सैद्धान्तिक के साथ लोक साहित्य के व्यवहारिक पक्ष को भी जान–समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थियों में लोक साहित्य के पिछड़े लोगों का साहित्य होने की धारणा दूर होगी और वे अभिनव आयामों से लोक साहित्य एवं संस्कृति की महत्ता एवं प्राासंगिकता को समझकर उसके प्रति आकर्षित होंगे।

सहायक ग्रंथ :

1. लोक साहित्य विज्ञान; सं. सत्येन्द्र; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
2. लोक साहित्य की भूमिका; डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
3. लोक साहित्य विमर्श; डॉ. श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, वाराणसी
4. लोक साहित्य और संस्कृति; डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास 16 वां भाग; नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. भाषा, संस्कृति और साहित्य; डॉ. हरीशकुमार शर्मा, अनंग प्रकाशन, दिल्ली।
7. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक–संस्कृति; डॉ. हरीशकुमार शर्मा, जास्मिन पब्लिकेशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी

चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNC514 (ख)	**भोजपुरी साहित्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भारतीय भाषाओं के साथ ही मातृभाषाओं तथा लोक–भाषाओं को भी महत्त्व दिया गया है। विश्वविद्यालय का एक बड़ा परिक्षेत्र भोजपुरी–भाषी है। अतः विद्यार्थी अपने क्षेत्र की लोकभाषा में रचित साहित्य से भी परिचित हो सकें, इस दृष्टि से भोजपुरी साहित्य का यह पत्र विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है। इस पत्र में अध्ययन हेतु भोजपुरी की कतिपय प्रतिनिधि गद्य–पद्य रचनाओं को चयनित किया गया है।

क्रेडिट : 5	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : **75**

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	भोजपुरी क्षेत्र और उसकी आंचलिक संस्कृति; भोजपुरी साहित्य का स्वरूप और विशेषताएं; भोजपुरी साहित्य और लोक साहित्य; समकालीन भोजपुरी लेखन; भोजपुरी साहित्य में समाज–संस्कृति; भाजपुरी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना; भोजपुरी लेखक और हिन्दी साहित्य।	15	1
2.	**काव्य :** गोरखनाथ–**सबदी** कबीर–**पद संख्या 1 से 9** बाबू रघुवीर नारायण–**बटोहिया** हीरा डोम–**अछूत के शिकायत**	15	1
3.	**काव्य :** मनोरंजन प्रसाद सिन्हा–**तब के जवान अब भइले पुरनिआ; फिरंगिया** धरीक्षण मिश्र–**कौना दुखे डोली में रोवति जाति कनियां** श्री रामजियावनदास बावला–**कौशल्या माई के सोच; किछु कहलो न जाला** गोरख पाण्डेय–**सपना; जागरण; समाजवाद**	15	1
4.	गद्य : विद्यानिवास मिश्र–**इमली के बीया** शिवप्रसाद सिंह–**कोजागरी** विश्वनाथ प्रसाद तिवारी–**पकड़ी के पेड़** हजारी प्रसाद द्विवेदी–**व्याख्यान**	15	1
5.	**नाटक एवं कहानी :** भिखारी ठाकुर–**गबरघिचोर** दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती– **किसान–भगवान** रामेश्वर सिंह काश्यप–**मछरी** विवेकी राय–**भंडेहरि** रामदेव शुक्ल–**तिसरकी आंख के अन्हार**	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी इस पत्र के अध्ययन से भोजपुरी में रचित रचनाओं से अवगत हो सकेंगे।
2. साहित्य के माध्यम से भोजपुरी संस्कृति के वैशिष्ट्य से भी उनका परिचय हो सकेगा।
3. भोजपुरी और हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों को समझ सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी

चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNC514 (ग)	**अवधी साहित्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

भोजपुरी के साथ–साथ सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का परिक्षेत्र अवधी से भी जुड़ता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की भावना के अनुरूप भोजपुरी साहित्य के विकल्प के रूप में अवधी साहित्य का यह पत्र तैयार किया गया है। इस पत्र का उद्देश्य अवधी साहित्य से विद्यार्थियों का परिचय करवाना है। अवधी मध्यकाल में साहित्य–सृजन की एक प्रमुख भाषा रही है। इसलिये इस पत्र में प्राचीन एवं अर्वाचीन– दोनों प्रकार के प्रमुख साहित्यकारों के साहित्य का चयन किया गया है।

क्रेडिट : 5	पूर्णांक : 25+75	उत्तीर्णांक : 33 प्रतिशत

कुल व्याख्यान संख्या : 75

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	अवधी क्षेत्र और उसकी संस्कृति; अवधी साहित्य का स्वरूप और विशेषताएं; अवधी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास; अवधी साहित्य और लोक साहित्य; समकालीन अवधी लेखन; अवधी साहित्य में समाज–संस्कृति; अवधी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना; अवधी रचनाकारों का हिन्दी साहित्य को योगदान।	15	1
2.	**मलिक मुहम्मद जायसी :** **पद्मावत–मानसरोदक खण्ड**	15	1
3.	**तुलसीदास :** **रामचरितमानस–अयोध्याकाण्ड (चित्रकूट प्रसंग)**	15	1
4.	**आधुनिक काव्य :**	15	1
5.	**गद्य साहित्य :**	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी इस पत्र के अध्ययन से अवधी में रचित रचनाओं से अवगत हो सकेंगे।
2. साहित्य के माध्यम से अवधी संस्कृति के वैशिष्ट्य से भी उनका परिचय हो सकेगा।
3. अवधी और हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों को समझ सकेंगे और हिन्दी के विकास में अवधी के योगदान से भी अवगत हो सकेंगे।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष			
चतुर्थ सेमेस्टर			
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNP515**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी शोध परियोजना**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :			
क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**	
कुल व्याख्यान संख्या : **75**			

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे और उस कार्य के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेंगे। शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा और विद्यार्थियों की मौखिक परीक्षा भी ली जायेगी। इस पत्र हेतु कुल पूर्णांक 100 होंगे, जिनमें से शोध–प्रबन्ध का मूल्यांकन 50 अंकों में किया जायेगा और 25 अंकों के लिये मौखिक परीक्षा होगी। शेष 25 अंक विद्यार्थी को तभी मिलेंगे, जब शोध परियाजना से सम्बन्धित विषय पर उसका कम–से–कम एक शोधपत्र यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित या पीयर रिव्यूड पत्रिका में प्रकाशित होगा।	15	08 (4+4)

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की वारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।